

एक छेउड़



Bangani

एक छेउड़

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



उत्तराखण्ड रै एक छोटौ ज़ाड़ गाउँ दि
एक पंचायत थी। तेस गाउँ दि मौर्द
ई सारै फैसलै कौरैण थै। छेउड़ियै
चुप रौयैण थै। तिउँरी आवाज़ बी ना
शुणैण थै।



गाउँ री छेउडियै डोखरौं दि काम कौरै
थी। औजि पाणि खि बी बौरी दुरै डैण
थै, औजि लौडिकियै सौकाळी इस्कुलेइ
पोरु छोडैण थै।



कमला गाउँ दि एक पौड़ी लिखी छेउड़
थी। तियै छेउड़िउँ री मैनत छोटी औरै
कौइ थी देखियौन्दी। एज़ि बौज़ै कौइ
तिंयै सुँचौ कि छेउड़िउँ री आवाज़
केलाइ ना शुणदै?



कुछ बौत्तै बासियै ग्राम पंचायत दि
चुनाव औणै वाळौ थौ, कमलाइ चुनाव
लौड़नै रौ फैसलौ कियौ। गाउँ रै लोगु
तिरौ मौज़ाक उड़ाओ।



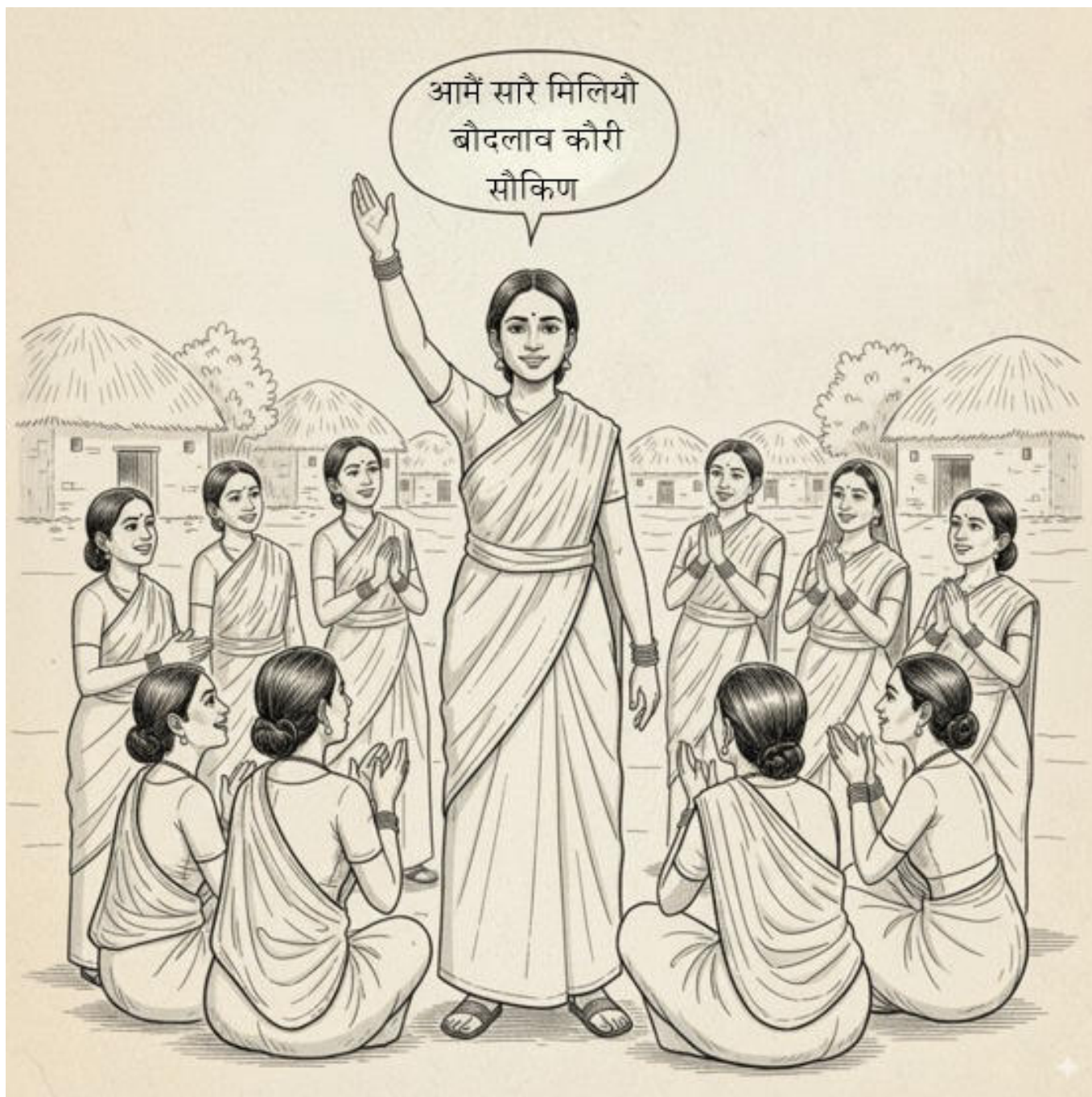
औज़ि बौड़ै बुज़ुर्ग बोल्दै लागै कि
"छेउड़ियै राजनीति ना सौमज़ी सौकदि
मौर्द ई पंचायतिण्ड चौलाण। पर
कमलाइ हार ना मानी।



कमलाइ गाउँ दि पौरचार कौरणौ शुरु
कियौ। सै हर एक गौरेदि डेइयौ छेउडिउँ
कौइ मिली। तियै ईस्कुल, पाणि, औज़ि
आवाज़ री बात की।



सारी छेउडियै कमला आरी आपड़ी
सारी पौरेशानिउं रै बारेदि बोलदी लागी।
इस्कुलेदि शौचालय ना नौथि औज़ि
लौड़कियै डौरैण थी। औज़ि पाणि री
कौमी री बौज़ै कौइ डोखरौउं दि काम
ना कौरी सौकदै।



कमलाइ बोलौ कि आमैं सारै मिलियौ
बौदलाव कौरी सौकिण, औज़ि ऐबै
छेउड़िउं री आवाज़ बी शुणियैली।
औज़ि गाउँ शिक्षा औज़ि पाणि बौरी
ज़ौरूरी चाइं।"



चुनाव रै दूसै गाउँ दि बौरी हलचल थी।
कमलाइ औराणे री उमीद सारिउँ री थी।
पर कमलाइ चुनाव दि जीत हासिल की।



कमलाइ गाउँ दि बौदलाव शुरु कियौ ।
इस्कुल दि पेटारौउँ केखि शौचालय
चौणाए । औज़ि पाणि री टाकी बी
डोखरौउँ रै नौज़िक लाई ।



ऐबै छेउड़ियै बी पंचायत दि खुलियौ बुशै
लाइ सौकैण थी। गाउँ रै लोग कमला री
तारिफ कौरदै लागै। औज़ि बोल्दै लागै
कि तुमु चिनाइ मीनेदि एती सारौ काम
कौरी गोऔ।



ऐबै लौड़कियै बी इस्कूलकै पौड़दि
डेन्दि लागी औज़ि लौड़कियै बी ऐबै
गाउँ रै बौदलाव रै बारेदि सुँचदै लागै ।
कमलाइ गाउँ रै लोगु कै सुँचणेरौ एक नौ
तौरिकौ देणौ ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....,धन्यवाद,.....

